त्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः

रामायण का वर्णन

ब्रह्मोवाच

रामायणमतो वक्ष्ये श्रुतं पापविनाशनम्।
विष्णुनाभ्याब्जतो ब्रह्मा मरीचिस्तत्सुतोऽभवत्॥१॥
मरीचेः कश्यपस्तस्माद्रविस्तस्मान्मनुः स्मृतः।
मनोरिक्ष्वाकुरस्याभूद्वंशे राजा रघुः स्मृतः॥२॥
रघोरजस्ततो जातो राजा दशरथो बली। तस्य पुत्रास्तु चत्वारो महाबलपराक्रमाः॥३॥
कौशल्यायामभूद्रामो भरतः कैकयीसुतः। सुतौ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्रायां बभूवतुः॥४॥
रामो भक्तः पितुर्मातुर्विश्वामित्रादवाप्तवात्। अस्त्रग्रामं ततो यक्षीं ताडकां प्रजघान ह॥५॥

ब्रह्मा ने कहा—अब मैं रामायण कहता हूं। इसे सुनने वाले के समस्त पापों का क्षय होता है। विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा का जन्म हुआ। उनके पुत्र हैं मरीचि, जिनके पुत्र हैं कश्यप। उनके पुत्र हैं सूर्य, जिनके पुत्र हैं वैवस्वत मनु। मनुपुत्र हैं इक्ष्वाकु। इनके वंश में महाराज रघु जन्मे थे। रघुपुत्र थे राजा अज। अज के पुत्र थे महाबली राजा दशरथ। इनके महाबली पराक्रमी चार पुत्र जन्मे। इनमें कौशल्या के गर्भ से रामचन्द्र, कैकेयी के गर्भ से भरत, सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण-शत्रुघ्न उत्पन्न हुये। पिता-माता के भक्त राम ने विश्वामित्र से विविध अस्त्र-शस्त्र को सीख कर ताड़का नामक यक्षिणी का नाश किया॥१-५॥

विश्वामित्रस्य यज्ञे वै सुबाहुं न्यवधीद् बली।
जनकस्य क्रतुं गत्वा उपयेमेऽथ जानकीम्॥६॥
उर्मिलां लक्ष्मणो वीरो भरतो माण्डवीं सुताम्।
शत्रुघ्नो वै कीर्त्तिमतीं कुशध्वजसुते उभे॥७॥
पित्रादिभिरयोध्यायां गत्वा रामादयः स्थिताः। युधाजितं मातुलञ्च शत्रुघ्नभरतौ गतौ॥८॥
गतयोर्नृपवर्य्योऽसौ राज्यं दातुं समुद्यतः। रामाय तत्सुपुत्राय कैकेय्या प्रार्थितं तदा।
चतुर्दशसमा वासो वने रामस्य वाञ्छितः॥९॥
रामः पितृहितार्थञ्च लक्ष्मणेन च सीतया। राज्यञ्च तृणवत्त्यक्त्वा शृङ्गवेरपुरं गतः॥१०॥
रथं त्यक्त्वा प्रयागञ्च चित्रकूटगिरिं गतः।
रामस्य तु वियोगेन राजा स्वर्गं समाश्रितः॥११॥

विश्वामित्र जब यज्ञरत थे, तब राम ने सुबाहु नामक राक्षस का वध किया। तदनन्तर वे जनक के यहां गये तथा जानकी से विवाह किया। तभी महावीर लक्ष्मण ने उर्मिला से, भरत ने कुशध्वज पुत्री

माण्डवी से तथा शत्रुघ्न ने कुशध्वज पुत्री श्रुतकीर्त्ति से विवाह किया। तदनन्तर रामचन्द्र आदि चारों भाई पिता दशरथ तथा मन्त्रियों के साथ अयोध्या में रहने लगे। तभी भरत एवं शत्रुघ्न अपने मामा युधाजित् के यहां गये। उस समय दशरथ ने अपने सुपुत्र राम को राज्यभार सौंपना चाहा। तभी कैकेयी ने अपना अभिलषित वर मांगा कि राम चौदह वर्ष वन में जायें। तब रामचन्द्र पिता के हितार्थ राज्य को तृणवत् छोड़ कर सीता एवं लक्ष्मण के साथ शृंगवेरपुर चले गये। वहां वे रथ त्याग कर प्रयाग गये, जहां से वे चित्रकूट जाकर रहने लगे। इधर राजा दशरथ ने राम के विछोह में प्राण त्यागा तथा स्वर्गगामी हो गये॥६-११॥

संस्कृत्य भरतश्चागाद्राममाह बलान्वितः। अयोध्यां तु समागत्य राज्यं कुरु महामते॥१२॥
स नैच्छत्पादुके दत्त्वा राज्याय भरताय तु। विसर्जितोऽथ भरतो रामराज्यमपालयत्॥१३॥
नन्दिग्रामे स्थितो भक्तो ह्ययोध्यां नाविशद् व्रती।
रामोऽपि चित्रकूटाच्च अत्रेराश्रममाययौ॥१४॥
नत्वा सुतीक्ष्णं चागस्त्यं दण्डकारण्यमागतः।
तत्र शूर्पणखा नाम राक्षसी चात्तुमागता॥१५॥
निकृत्य कर्णौ नासे च रामेणाथापराहिता।
तत्प्रेरितः खरश्चागाद्दूषणस्त्रिशिरास्तथा॥१६॥
चतुर्दशसहस्रेण राक्षसां तु बलेन च। रामोऽपि प्रेषयामास बाणैर्यमपुरञ्च तान्॥१७॥

राजकुमार भरत ने दशरथ का संस्कार किया तथा प्रचुर सैन्य वाहन के साथ रामचन्द्र के पास पहुंचे। उन्होंने राम से कहा—"महामति! अयोध्या आकर राज्य पालन करिये।" रामचन्द्र इस बात से सहमत नहीं हो सके, तथापि उन्होंने अपनी पादुका की जोड़ी देकर भरत को विदा किया। भरत भी न्यास के तौर पर राम के राज्य का शासन करने लगे। रामचन्द्र पर भरत की असीम भक्ति होने के कारण वे अयोध्या नहीं गये। वे भी रामचन्द्र की तरह व्रती होकर नन्दीग्राम में ही रहने लगे। रामचन्द्र अब चित्रकूट से महर्षि अत्रि के आश्रम गये। वहां से उन्होंने मुनि सुतीक्ष्ण तथा अगस्त्य को प्रणाम करके दण्डकारण्य में प्रवेश किया। वहां उनको देख कर शूर्पणखा राक्षसी सीता को खाने पहुंची। रामचन्द्र ने उसकी नासिका तथा कान काट कर भगा दिया। तब शूर्पणखा के कहने पर खर-दूषण त्रिशिरा राक्षस चौदह हजार सेना के साथ राम से युद्ध करने लगे। राम ने अपने बाणों से सभी को यमलोक भेज दिया॥१२-१७॥

राक्षस्या प्रेरितोऽभ्यागाद्रावणो हरणाय हि।
मृगरूपं स मारीचं कृत्वाग्रेऽथ त्रिदण्डधृक्॥१८॥
सीतया प्रेरितो रामो मारीचं निजघान ह।
म्रियमाणः स च प्राह हा सीते लक्ष्मणेति च॥१९॥
सीतोक्तो लक्ष्मणोऽथागाद्रामश्चानु ददर्श तम्।
उवाच राक्षसी माया नूनं सीता हृतेति सा॥२०॥

इसके पश्चात् शूर्पणखा ने राक्षसराज रावण को उत्तेजना दिलाकर सीता के हरणार्थ प्रेरित किया।

रावण इस हेतु मृगरूपी मारीच को सीता के सामने भेज कर स्वयं त्रिदण्डी भिक्षुक बनकर दण्डकवन गया। सीता के कथन के अनुसार श्रीराम ने मायामृग मारीच का पीछा करते हुये उसका वध किया। प्राण त्यागते समय मारीच ने "हा सीता, हा लक्ष्मण" का चीत्कार शब्द किया। तब सीता की आज्ञा से लक्ष्मण राम के अन्वेषणार्थ वन में गये। राम ने लक्ष्मण को देख कर कहा—"यह सब तो राक्षसी माया थी। अब राक्षस निःसन्देह सीताहरण कर लेंगे"॥१८-२०॥

रावणोऽन्तरमासाद्य अङ्केनादाय जानकीम्।
जटायुषं विनिर्भिद्य ययौ लङ्कां ततो बली॥२१॥
अशोकवृक्षच्छायायां रक्षितां तामधारयत्।
आगत्य रामः शून्याञ्च पर्णशालां ददर्श ह॥२२॥
शोकं कृत्वाथ जानक्या मार्गणं कृतवान्प्रभुः।
जटायुषञ्च संस्कृत्य तदुक्तो दक्षिणां दिशम्॥२३॥
गत्वा सख्यं ततश्चक्रे सुग्रीवेण च राघवः। सप्त तालान्विनिर्भिद्य शरेणानतपर्वणा॥२४॥
बालिनञ्च विनिर्भिद्य किष्किन्ध्यायां हरीश्वरम्।
सुग्रीवं कृतवान् राम ऋष्यमूके स्वयं स्थितः॥२५॥

उधर महाबली रावण ने मौका पाकर सीता को गोद में उठाया तथा जटायु को मार कर लंका पहुंचा। राक्षसराज दशानन ने सीता को अशोक वाटिका में रखा तथा राक्षसी लोगों को उनका प्रहरी बनाया। जब राम ने कुटिया में आकर देखा, तब उसे खाली पाया। वहां जानकी नहीं थीं। वे शोक प्रकट करते वैदेही की खोज में आगे बढ़े। उन्होंने जटायु का अंतिम संस्कार किया तथा जटायु के कथनानुसार दक्षिण की ओर चले गये। उन्होंने सुग्रीव के साथ मित्रता स्थापित करके उसे विश्वास दिलाने हेतु सात तालवृक्षों का भेदन एक ही बाण से किया। उन्होंने बालीवध करके सुग्रीव को किष्किन्धापति बनाया तथा स्वयं ऋष्यमूक पर्वत पर विराजमान हो गये॥२१-२५॥

सुग्रीवः प्रेषयामास वानरान्पर्वतोपमान्। सीताया मार्गणं कर्त्तुं पूर्वाद्यैः सुमहाबलान्॥२६॥
प्रतीचीमुत्तरां प्राचीं दिशं गत्वा समागताः।
दक्षिणान्तु दिशं ये च मार्गयन्तोऽथ जानकीम्॥२७॥
वनानि पर्वतान्द्वीपान्नदीनां पुलिनानि च। जानकीन्ते ह्यपश्यन्तो मरणे कृतनिश्चयाः॥२८॥
सम्पातिवचनाज्ज्ञात्वा हनूमान्कपिकुञ्जरः। शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे मकरालयम्॥२९॥
अपश्यज्जानकीं तत्र अशोकवनिकास्थिताम्।
भर्त्सितां राक्षसीभिश्च रावणेन च रक्षसा॥३०॥
भव भार्य्येति वदता चिन्तयन्तीञ्च राघवम्।
अङ्गुरीयं कपिर्दत्त्वा सीतां कौशल्यमब्रवीत्॥३१॥

अब वानरराज सुग्रीव ने सीता अन्वेषणार्थ पर्वत के समान विशाल वानरों को चारों ओर भेजा। वे वानर जो पूर्व-उत्तर-पश्चिम गये थे, निष्फल होकर लौट आये। जो दक्षिण में जानकी के अन्वेषणार्थ गये थे, उन्होंने वन, पर्वत, द्वीप, नदी तट को बहुतेरा खोजा तथापि कहीं जानकी का पता नहीं मिला। अब वे सभी निराश होकर अपने जीवन त्यागार्थ उद्यत हो गये। तभी सम्पाति गृध्र के वचनानुसार जानकी का पता लगने पर वानर वीर हनुमान ने एक उछाल में सौ योजन समुद्र पार कर लिया। उन्होंने लंका जाकर देखा कि अशोक वन में सीता माता अवस्थित हैं। राक्षसी उन्हें बारम्बार अपमानित कर रही है तथा राक्षसराज रावण "मेरी पत्नी बनो" इस वाक्य से उनको उत्पीड़ित कर रहा है। लेकिन सीता उसकी बात अनसुनी करके राम के ध्यान में तल्लीन हैं। तत्पश्चात् हनुमान ने मौका पाकर सीता को रामचन्द्र की अंगूठी दी तथा उनसे कुशल वार्त्ता किया॥२६-३१॥

रामस्य तस्य दूतोऽहं शोकं मा कुरु मैथिलि।
स्वाभिज्ञानञ्च मे देहि येन रामः स्मरिष्यति॥३२॥
तच्छ्रुत्वा प्रददौ सीता वेणीरत्नं हनूमते। यथा रामो नयेच्छीघ्रं तथा वाच्यं त्वया गते॥३३॥
तथेत्युक्त्वा तु हनुमान्वनं दिव्यं बभञ्ज ह।
हत्वाक्षं राक्षसांश्चान्यान्बन्धनं स्वयमागताः॥३४॥
सर्वैरिन्द्रजितो बाणैर्दृष्ट्वा रावणमब्रवीन्।
रामदूतोऽस्मि हनुमान्देहि रामाय मैथिलीम्॥३५॥

वानर वीर हनुमान ने कहा—"मैं राम का दूत हूं। हे माता मैथिली! शोक मत कीजिये। आप ऐसी कोई पहचान दीजिये, जिसे देख कर रामचन्द्र पहचानें कि मैं वास्तव में आपसे मिला हूं।" यह सुन कर सीता ने अपनी चूड़ामणि उतार कर हनुमान को प्रदान करके कहा कि—"रामचन्द्र शीघ्र मेरा यहां से उद्धार करें, यह कहना।" तब हनुमान ने 'तथास्तु' कहा तथा रावण के दिव्य प्रमोदवन को उजाड़ दिया। उन्होंने अक्षय कुमार तथा अनेक राक्षसों का वध किया तथा इन्द्रजीत के ब्रह्मास्त्र से बंध गये। उन्होंने रावण के पास ले जाये जाने पर उसे देख कर कहा—"मैं रामदूत हूं। मेरा नाम हनुमान है। अब तुम रामचन्द्र के पास सीता को लौटा दो"॥३२-३५॥

एतच्छ्रुत्वा प्रकुपितो दीपयामास पुच्छकम्।
कपिर्ज्वलितलाङ्गूलो लङ्कां देहे महाबलः॥३६॥
दग्ध्वा लङ्कां समायातो रामपार्श्वं स वानरः।
जग्ध्वा फलं मधुवने दृष्टा सीतेत्यवेदयत्॥३७॥
वेणीरत्नञ्च रामाय रामो लङ्कापुरीं ययौ। ससुग्रीवः सहनूमान्साङ्गदाद्यः सलक्ष्मणः॥३८॥
विभीषणोऽपि सम्प्राप्तः शरणं राघवं प्रति।
लङ्कैश्वर्य्येष्वभ्यषिञ्चद्रामस्तं रावणानुजम्॥३९॥

रावण यह सुनकर कुपित हो गया तथा उसने हनुमान की पूंछ में अग्नि लगवा दिया। उस ज्वलित

पूंछ से महाबली हनुमान ने पूरी लंका को जला दिया। पवनतनय एवंविध लंका को जलाकर रावण के मधुवन में अमृत फल खाकर राम के पास जाकर कहने लगे—"मैं सीता मां को देख आया।" तब उन्होंने चूड़ामणि राम को प्रदान किया। तभी राम, लक्ष्मण, सुग्रीव आदि ने लंकापुरी की ओर यात्रा किया। इसी समय रावण के छोटे भाई विभीषण राम की शरण में आ गये। रामचन्द्र ने तत्क्षण विभीषण को लंका के राज्यपद पर अभिषिक्त कर दिया॥३६-३९॥

रामो नलेन सेतुञ्च कृत्वाब्धौ चोत्ततार तम्। सुवेलावस्थितश्चैव पुरीं लङ्कां ददर्श ह॥४०॥
अथ ते वानरा वीरा नीलाङ्गदनलादयः। धूम्रधूम्राक्षवीरेन्द्रा जाम्बवत्प्रमुखास्तदा॥४१॥
मैन्दद्विविदमुखास्ते पुरीं लङ्कां बभञ्जिरे।
राक्षसांश्च महाकायान्कालाञ्जनचयोपमान्॥४२॥
रामः सलक्ष्मणो हत्वा सकपिः सर्वराक्षसान्।
विद्युज्जिह्वञ्च धूम्राक्षं देवान्तनरान्तकौ॥४३॥
महोदरमहापार्श्वातिकायं महाबलम्। कुम्भं निकुम्भं मत्तञ्च मकराक्षं ह्यकम्पनम्॥४४॥
प्रहस्तं वीरमुन्मत्तं कुम्भकर्णं महाबलम्॥४५॥
रावणिं लक्ष्मणश्छित्त्वा ह्यस्त्राद्यैः राघवो बली।
निकृत्य बाहुचक्राणि रावणं तु व्यपातयत्॥४६॥

तब रामचन्द्र ने वानर वीर नल से समुद्र पर पुल बनवाया तथा सभी वानर सैन्य के साथ समुद्र पार किया। उन्होंने सुबेल पर्वत पर बैठ कर सम्पूर्ण लंका को देखा। अगले दिन नील, अंगद, नल, धूम्र, धूम्राक्ष, जाम्बवान्, मैन्द, द्विविध आदि वानर वीर सेनानी ने लंकापुरी का मर्दन प्रारम्भ कर दिया। वे काले काजल के पहाड़ जैसे राक्षसों को मारने लगे। महावीर राम-लक्ष्मण ने भी वानर वीरों के साथ मिल कर विद्युजिह्व, धूम्राक्ष, देवान्तक, नरान्तक, महोदर, महापार्श्व, अतिकाय, कुम्भ, निकुम्भ, मत्त, मकराक्ष, अकम्पन, प्रहस्थ, उन्मत्त, कुंभकर्ण तथा अन्य महावीर, महाबली राक्षसों को नष्ट कर दिया। बाद में लक्ष्मण ने इन्द्रजीत का वध कर दिया। रघुवंश के अवतंस महाबली राम ने रावण की बाहुओं को काट कर रावण का संहार कर दिया॥४०-४६॥

सीतां शुद्धां गृहीत्वाथ विमाने पुष्पके स्थितः।
सवानरः समायातो ह्ययोध्यां प्रवरां पुरीम्॥४७॥
तत्र राज्यं चकाराथ पुत्रवत्पालयन्प्रजाः। दशाश्वमेधानाहृत्य गयाशिरसि पातनम्॥४८॥
पिण्डानां विधिवत्कृत्वा दत्त्वा दानानि राघवः।
पुत्रौ कुशलवौ दृष्ट्वा तौ च राज्येऽभ्यषेचयत्॥४९॥
एकादशसहस्राणि रामो राज्यमकारयत्।
शत्रुघ्नो लवणं जघ्ने शैलूषो भरतः स्थितः॥५०॥

अगस्त्यादीन्मुनीन्नत्वा श्रुत्वोत्पत्तिञ्च रक्षसाम्।
स्वर्गं गतो जनैः सार्द्धमयोध्यास्थैः कृतार्थकः॥५१॥

॥इति गारुडे महापुराणे रामायणवर्णनं नाम त्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥१४३॥

तब सीता की अग्निपरीक्षा लेकर रामचन्द्र उनको लेकर वानरों के साथ पुष्पक विमान पर बैठे तथा अयोध्या लौट आये। वे राजसिंहासन पर बैठ कर प्रजा का पुत्रवत् पालन करने लगे। उन्होंने दस अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किये थे। उन्होंने गया में गयःशिर पर सविधि पूर्वजों को पिण्डदान करके ब्राह्मणों को प्रचुर धन दान दिया। उन्होंने कुश-लव दो पुत्रों को उत्पन्न करके उनका राज्याभिषेक किया। राम ने ग्यारह हजार वर्ष राज्य पालन किया। राम के राज्यत्व के समय शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध किया गया। इसी समय भरत नामक नाट्यकार ने नाटकाभिनय भी किया। तदनन्तर रामचन्द्र ने अगस्त्य आदि मुनियों को प्रणाम करके राक्षसों की उत्पत्ति का प्रसंग सुना। इस प्रकार वे देवकार्य करके अयोध्या के लोगों के साथ स्वर्ग चले गये॥४७-५१॥

॥एक सौ तिरालीसवां अध्याय समाप्त॥